



Research Article

प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली उपन्यास में किन्नर विमर्श

डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद

सहयोगी अध्यायक, हिंदी विभाग, कला महाविद्यालय, बिडकीन, तह. पैठण, जि. छ. संभाजीनगर, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author: * डॉ. शेख मोहसीन शेख रशीद

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.22662628>

सारांश

हिंदी साहित्य में किन्नर विमर्श समकालीन साहित्य की एक महत्वपूर्ण और संवेदनशील धारा के रूप में उभरकर सामने आया है। प्रदीप सौरभ का उपन्यास तीसरी ताली किन्नर समुदाय के जीवन, संघर्ष, सामाजिक उपेक्षा, लैंगिक पहचान, आर्थिक विषमता, शारीरिक एवं मानसिक शोषण तथा सामाजिक अस्मिता को केंद्र में रखकर लिखा गया एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। प्रस्तुत शोध में तीसरी ताली के माध्यम से किन्नर जीवन के विविध पक्षों का विश्लेषण किया गया है। उपन्यास में किन्नर समुदाय को केवल उपेक्षित अथवा हास्य का पात्र न मानकर उनकी मानवीय संवेदनाओं, इच्छाओं, संबंधों और अस्तित्व-संघर्ष को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। विनीत, मंजू, डिम्पल, विनीता, निकिता, चितकबरी तथा अन्य पात्रों के माध्यम से लेखक ने लैंगिक पहचान और सामाजिक स्वीकृति की जटिलताओं को उजागर किया है। उपन्यास में परिवार और समाज द्वारा किन्नरों के प्रति अपनाए जाने वाले भेदभाव, रोजगार की समस्या, गरीबी, शोषण, हिंसा, प्रेम, वैवाहिक संबंध, 'गिरिया' की परंपरा तथा आत्मसम्मान की आकांक्षा जैसे विभिन्न मुद्दों को रेखांकित किया गया है। साथ ही, उपन्यास यह भी स्पष्ट करता है कि किन्नर समुदाय के भीतर विविध सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ विद्यमान हैं और उन्हें एकरूपता से देखना उचित नहीं है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि तीसरी ताली किन्नर समुदाय की उपेक्षित आवाज को साहित्यिक अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए समाज की रूढ़िवादी लैंगिक धारणाओं पर प्रश्न उठाता है। इस प्रकार यह उपन्यास किन्नर विमर्श को मानवीय संवेदना, सामाजिक न्याय, पहचान और समानता के व्यापक संदर्भ से जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कृति के रूप में सामने आता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2583-7397
- Received: 15-07-2026
- Accepted: 29-08-2026
- Published: 08-09-2026
- IJCRM:5(5); 2026: 118-120
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

रशीद शे. मो. शे. प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली उपन्यास में किन्नर विमर्श. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(5):118-120.

Access this Article Online



www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: किन्नर विमर्श, तीसरी ताली, प्रदीप सौरभ, लैंगिक पहचान, सामाजिक उपेक्षा, किन्नर जीवन, अस्मिता, शोषण, सामाजिक संघर्ष, मानवीय संवेदना, समानता, सामाजिक न्याय।

1. प्रस्तावना

वैज्ञानिक प्रदीप सौरभ हिंदी के चर्चित उपन्यासकारों में एक है। उनका जन्म सन 1959 में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिल्ले में हुआ। उनकी शिक्षा दिक्षा इलाहाबाद के विश्वविद्यालय में हुई। वे छोटपन से ही क्रांतिकारी विचारों के थे किसी भी उनचाहे समाज विघातक घटना का वे पुरजोर विरोध करते देखे जाते हैं। उनके इसी स्वभाव के अनुरूप वे कई अखबारों में लेखन कार्य करते देखे जा सकते हैं। वे कई विश्वविद्यालयों में व्याख्याता के रूप में भी कार्य कर रहे हैं। उन्हें इसी कारणों से शायद चर्चित साप्ताहिक 'साप्ताहिक हिंदूस्थान' में संपादक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। 'अक्कड-बक्कड' और 'तारीफ आपकी' जैसे नियमित स्तंभ वे लिखते रहे। उनकी विशेषता में यह बतलाया जा सकता है की उन्होंने बच्चों के लिए पहला अखबार निकाला। उन्होंने 'मुन्नी मोबाइल', 'तीसरी ताली', 'देश - भीतर देश' और 'सिर्फ तितली' उपन्यासों के अलावा कविताओं के पुस्तक, बच्चों से जुड़ी कहानियाँ के पुस्तक संपादित की। उनके उपन्यासों पर कई विश्व विद्यालयों में शोध कार्य हुए हैं। वे 30 वर्ष से अधिक समय से साहित्य सेवा कर रहे हैं। उन्हें उनके पत्रकारीता 'संपादन', कार्य के साथ उपन्यासकार के रूप में 'तीसरी ताली उपन्यास' से अत्यधिक लोकप्रियता हासिल हुई यह उपन्यास किन्नर जीवन का आईना बनकर समाज के सम्मुख उनकी वास्तविकता को बेझिझक पेश करता है।

प्रदीप सौरभ कृत 'तीसरी ताली उपन्यास' का अनुशिलन :

प्रदीप सौरभ कृत तीसरी ताली उपन्यास सन 2009 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली में छापा। उस उपन्यास ने किन्नरों के वास्तविक जीवन को अधोरेखित करते हुए पाठक के मन में किसी भी किन्नर विषयक प्रश्न को न छोड़ा। प्रदीप सौरभने किन्नरों के विविध रूप जैसे LGBTQ के सारे प्रकारों को इस उपन्यास में दर्शाया है। आम समाज में किन्नर बच्चे का पैदा होना अभिशाप सा माना गया है। किन्नर बच्चे के पैदा होते ही बच्चे के माता-पिता और अन्य परिवार के सदस्य बड़े पशोपेश में आ जाते हैं की अब इसका क्या करे? क्योंकि किन्नर व्यक्ति को आज भी समाज अपनाता नहीं है। कुछ वैसे ही तीसरी ताली उपन्यास में गौतम साहब और आनंदी आंटी का बेटा 'विनीत' हिजड़े के रूप में जन्मलेता है। विनीत जैसे-जैसे बड़ा होता है वैसे वह स्त्री सुलभ कार्यों में लग जाता है पर वह शारीरिक रूप से पुरुष जैसा होती है। इसलिए माता-पिता उसे जबरन पुरुषी रोल अपनाने की सकती करते हैं पर अन्य बहनों की तरह वह खुद को लड़की मानता है। लेखक लिखते हैं, "उसे लड़कों के कपड़े पहनने से परहेज होने लगा। घर में वह कोई न होता तो वह अपनी बहनों को पैंटी - ब्रा पहन लेता। बिन्दी लगाता। लिपिस्टीक लगाता। शीशे में घंटो अपने आपको निहारता।"¹ विनीत के विरुद्ध 'तीसरी ताली' उपन्यास की पात्र मंजू वास्तव में लड़की है लेकिन हिजड़ो के साथ रहते - रहते वह स्वयं को थी हिजड़ा समझने लगती है। उसके शारीरिक हाव भाव भी कुछ वैसे ही हो जाते हैं। लेखक लिखते हैं, "कभी मण्डली के किसी सदस्य को इस बात का एहसास ही नहीं हुआ था कि वह स्त्री है। असल में मंजू जब पैदा हुई तो उसके गरीब माता - पिता ने दान दहेज के डर से उसे थोड़े से पैसों के लिए डिम्पल को बेच दिया था। डिम्पल का उस वक्त मातृत्व जागृत हो गया। उसे बच्चे की आस थी। बच्चा वह जन नहीं सकती थी। वह कभी-कभी सोचती थी की जो जनम नहीं सकते, वे बच्चों के उपर पड़नेवाले काले को दूर रखने का आशीर्वाद देते हैं।"¹ यहाँ लेखक यह

घतकाना चाहते हैं की मंजू पुरीतरह स्त्री होने के बावजूद भी डिम्पल उसे स्त्री के रूप में नहीं तो किन्नर के रूप में देखना पसंद करती है। किन्नर विमर्श में किन्नरों के रोजगार स्वास्थ्य समस्या तथा सामाजिक मान्यता अधिक उग्र रूप में उभरती है। किन्नरों के शारीरिक शोषण की समस्या अधिक प्रभावित करती है क्योंकि किन्नर ना पुरुष होते हैं ना स्त्री पर फिर भी किन्नर व्यक्ति में स्त्रीभाव की अधिकता पायी जाती है और यही भाव उपहास और शोषण का विषय बन जाती है। जैसे स्त्री के शरीर को देखकर पुरुष स्त्री को अपनाने में लग जाता है। यही किन्नरों के शारीरिक शोषण का केंद्र होता है। 'तीसरी ताली उपन्यास' में किन्नरों के हर एक प्रकार के साथ किन्नरों के हर एक पहलु को उजागर करने का प्रयत्न लेखक ने किया है। वे किन्नरों के प्रमुख के बारे में उपन्यास में लिखते हैं, "डिम्पल, रेखा, चितकबरी तथा नीलम तीनों की हिजड़ों की गुरू हैं। तीनों के अलग अलग डेरे हैं। तीनों की अलग-अलग गद्दिया है। तीनों के चले हैं। चन्दाबाई की मण्डली में नरगिस, नीलम और रीना ये तीनों चन्दाबाई की ही शिष्य हैं। विनीत की कहानी के साथ कुछ कहानियाँ और भी हैं, जैसे समलैंगिक सम्बन्धों को लेकर बनी हुई विमल और अनिल तथा यास्मीन और जुलेखा की कहानी, जो मुख्य कथा से सीधा न जुड़कर अपनी एक कअलग कथा बुनती है। ऐसा प्रतीत होता है कि कथा का कोई भी पात्र पूर्ण पुरुष या पूर्ण स्त्री नहीं है। यह असामान्य लिंगधारियों की कथा है।

'तीसरी ताली' उपन्यास में राजा पुर्ण पुरुष है तो मंजू स्त्री है उससे प्रेम करने लगता इसी प्रेम के चलते मंजू गर्भवती रह जाती है। पर डिम्पल जो मंजू की पालक है। वह हिजड़ा होने के कारण यह रिश्ता कबुल नहीं करती है वह मंजू के गर्भ को गिरा देती है और राजा के शिष्य को कटवा देती है।

उपन्यास में लेखक गरीबी से तंग आकर हिजड़े का रूप लेनेवाले श्यामसुंदर दास के लड़के की कथा भी है। जो सोनम नाम हिजड़े के सम्पर्क में आता है और खुद हिजड़े का रूप अपनाता है। तब सोनम उसे समझाती है को तुम तो पुरुष हो पर क्यों हिजड़ा बन जाना चाहते हो तब वह सोनम से कहता है, "माना कि मैं मर्द हूँ। लेकिन यह समाज मुझे मर्द का काम लेने को राजी नहीं है। मुझे इस समाज ने दाया की तरह भोग की चीज में तब्दील कर दिया है। मैं मर्द रहूँ, औरत रहूँ या फिर हिजड़ा बन जाऊँ। इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। पेट की आग तो बड़े-बड़ों को न जाने क्या - क्या बना देती है।"³

हिजड़ों के पती के बारे में प्रदीप सौरभ लिखते हैं की, 'हिजड़ों के पती भी होते हैं वे आम औरतों की तरह अपना पती किसी पुरुष को मानती है, किसी पुरुष को अपना पती मानते हैं। हिजड़े के पती आम तौर पर समलैंगिक या हिजड़ों के रखवालदार होते हैं जिन्हें 'गिरिया' कहा जाता है। वे गिरिया हिजड़ो की रक्षा करते हैं, "गिरिया वह होते हैं जिन्हें हिजड़े अपना पति मान लेते हैं। उनके लिए वे आम महिलाओं की तरह करवा चौथ से लेकर पति के होनेवाले हर तीज-त्यौहार मनाते हैं। अर्थात: हिजड़ें मूँछ वालों को ही गिरिया बनाना पसन्द करते हैं।"⁴ उपन्यास में नरगिस हिजड़े का पती या गिरिया गोपाल है।

हिजड़ो में साहस भरने का काम भी प्रदीप सौरभ ने किया। विनीता नामक हिजड़ा आम समाज में सर उपर उठाकर चलता दिखाई देता है। जो 'गे वर्ल्ड' नामक पार्लर की चालक, टिवी शो का मालक, पेज श्री पार्टी का निर्माता बन जाती है। यह जीवन उसके लिए संघर्षमय ही रहता है। लेखक उसके बारे में लिखते हैं, "वह इस पैदानपर चढ़ने से

पहले आजीब मानसिकता से गुजर रहा था। कई-कई हफ्ते घर के अंदर बन्द रहता। उसे लगता कि उसके पिता उसे जबरिया लडका बनाने पर तुले है। वह अपनी बहनों की तरह ही अपने को लड़की मानता का। उसे लडको के कपड़े पहनने से परहेज होने लगा।⁴

किन्नर चितकबरी के माध्यम से लेखक गुन्हेगार बनते किन्नरों की समस्याओं पर भी विचार रखते हैं। वे चितकबरी द्वारा किन्नरों के आर्थिक जीवन को। अधोरेखित करते हुए लिखते हैं की कई बार किन्नरों की कुछ टोलियाँ सेक्स वर्कर्स के साथ मिलकर आम व्यक्ति की आर्थिक लुट करते हैं या कई बार लुटे भी जाते हैं। साथ ही कई बार जेल की हवा भी उसे खानी पड़ती है।

आनंदी आन्टी की बेटी निकिता जो अपने परिवार में पली- बढी और शिक्षित हुई तब वह सामान्य जीवन जी रही थी पर जब उसे किन्नर करार देकर नीलन किन्नर के डेरे पर लाकर छोड़ दिया जाता है, तब वह यहाँ का माहौल देखकर अचंबित हो जाती है। वहाँ के माहौल को चित्रीत करते हुए लेखक लिखते हैं, "आदमी को आदमी के साथ रहते-सोते देख निकिता विचलित होती है। उसने आदमी को कभी आदमी के साथ पति-पत्नी की तरह रहते नहीं देखा था। यह सब देखकर वह अपने होने को निरर्थक मानती है। अपने को किसी से कम नहीं समझनेवाली निकिता के अंदर अपने आधे अधूरे होने का हीनभाव घर करने लगा।"⁶ कुछ दिन बाद निकिता आत्महत्या कर लेती है। यहाँ पर लेखकने आत्महत्या करती किन्नर का चित्रण किया है।

डॉ. शंकर कुमार जी तीसरी ताली उपन्यास को संक्षेप में व्यक्त करते हुए लिखते हैं, प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'तीसरी ताली' वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक शैली में लिखा गया उपन्यास है। तीसरी ताली उपन्यास हिन्दी कथा साहित्य का तीसरा उपन्यास है जो किन्नरों के जीवन पर केंद्रित है। यह उपन्यास हमें लिंग के अकेलेपन और अलगाव के बावजूद सभ्य समाज में जीने की ललक से भरपूर किन्नर या हिजड़ों के जीवन, उनके परिवेश से हमारा परिचय करवाता है। यह उपन्यास हमें जीवन ऐसे तमाम सच से परिचित कराता है जिन्हें हम माने या न माने, लेकिन उसका अपना वजूद इसी समाज में मौजूद है।⁷

निष्कर्ष

प्रदीप सौरभ ने तीसरी ताली उपन्यास द्वारा किन्नर विमर्श के हर कोने को प्रकाशित किया है। वे किन्नरों के हर एक वर्ग को अधोरेखित करते दिखे। ऐसा किसी भी अन्य उपन्यासकारों ने नहीं किया। आम उपन्यास किसी एक मुख्य पात्र के इर्दगिर्द घुमता है पर तीसरी ताली उपन्यास में नहीं है। हर किन्नर वर्ग विशेष को लेखकने यहाँ जगह दी है। किन्नरों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति के साथ प्रदीपजीने किन्नरों की मुख्यतः मानसिक स्थिति को दर्शाया है। प्रदीप सौरभ का यह उपन्यास शायद इसी लिए अन्य किन्नर विमर्श के उपन्यासों से अधिक प्रसिद्ध हुआ है।

संदर्भ सूची

1. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.82.
2. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.31.

3. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.56.
4. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.51.
5. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.48.
6. सौरभ प्रदीप. तीसरी ताली. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन; 2009. p.46.
7. कुमार शंकर. इक्कीसवीं सदी के किन्नर-केंद्रित हिंदी उपन्यासों में संवेदना और शिल्प. p.233.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author



डॉ. शेख मोहसिन शेख रशीद कला महाविद्यालय, बिडकीन, पैठण, छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र में हिंदी विभाग के सहयोगी अध्यापक हैं। वे हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्यापन और शोध से जुड़े हैं। उनका शैक्षणिक कार्य विद्यार्थियों में भाषाई दक्षता, साहित्यिक समझ, आलोचनात्मक चिंतन तथा शोध अभिरुचि विकसित करने पर केंद्रित है।